स्नातक उपाधि प्रतिष्ठा (सी.बी.सी.एस.)
(बी.ए.ऑनर्स)

सत्रीय कार्य
(जनवरी 2022 तथा जुलाई, 2022 सत्र के दूसरे सेमेस्टर के लिए)

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.सी–104
आधुनिक हिंदी कविता (छायावाद तक)

इग्नू
जन-जन का विश्वविद्यालय

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068

हिन्दी में आधार पाठ्यक्रम
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.सी.–104 / बी.ए.ऑनर्स

प्रिय छात्र / छात्राओ!

'आधुनिक हिंदी कविता (छायावाद तक)' पाठ्यक्रम में आपको एक सत्रीय कार्य करना है। यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य (टी.एम.ए.) है। सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किये गये हैं।

उद्देश्य : सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप स्वयं उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। उद्देश्य यह भी है कि अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा और समझा है उसे आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरंभ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1. ऐच्छिक पाठ्यक्रम के लिए कार्यक्रम दर्शिका में दिए गए विस्तृत निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए।
2. अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।
3. अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के प्रथम पृष्ठ के मध्य भाग में पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख कीजिए।
4. उत्तर पुस्तिका का प्रथम पृष्ठ निम्न प्रकार से शुरू होगा :

अनुक्रमांक : ....
नाम : ....
पता : ....
....

पाठ्यक्रम का नाम / कोड : ....

सत्रीय कार्य कोड : ....
अध्ययन केन्द्र का नाम / कोड : .... दिनांक : ....

5. उत्तर के लिए केवल फुलस्केप के आकार के कागज़ का इस्तेमाल करें और उन कागज़ों को अच्छी तरह से बाँध लें।
6. प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें और अपनी ही लिखावट में उत्तर दें।
7. सत्रीय कार्य पूरा करके जाँच के लिए अपने अध्ययन केन्द्र के संयोजक (Coordinator) के पास निर्धारित तिथि तक अवश्य जमा करा दें।

सत्रीय कार्य जमा करने की अंतिम तिथि :
जनवरी 2022 सत्र के दूसरे सेमेस्टर के लिए : 31 अक्टूबर, 2022
जुलाई 2022 सत्र के दूसरे सेमेस्टर के लिए : 30 अप्रैल, 2023

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

सत्रीय कार्य में आपसे मुख्य रूप से तीन तरह के प्रश्न पूछे गए हैं।
उत्तर देने के लिए आप निम्नलिखित विधि से तैयारी करेंगे तो आपके लिए लाभप्रद होगा :

1. **अध्ययन** : सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में सभी खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से पुनर्व्यवस्थित कीजिए।

2. **अभ्यास** : अपने उत्तर का प्रारूप लिखने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। निबंधात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरंभ और उपसंहार का विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्ध और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,
ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (Paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हो,
ग) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा जो आपकी अभिव्यक्ति, शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो।
घ) उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबा न हो, और
ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

1. **प्रस्तुति** : जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसको साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप ज़ोर देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

2. **विशेष** : अपने उत्तर की फ़ोटो प्रति/कार्बन प्रति अपने पास अवश्य रखें।

शुभकामनाओं सहित!

नोट : याद रखें कि विश्वविद्यालय के नए नियमानुसार परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

सत्रीय कार्य
(संपूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.सी.–104 / बी.ए.ऑनर्स
सत्रीय कार्य कोड : बी.एच.डी.सी.–104 / 2022–23
कुल अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खंड – क

निम्नलिखित पद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए : 10×4=40

1. रहै क्यों एक म्यान असि दोय।
जिन नैनन में हरि रस छायो तेहि क्यों भाखै कोय।
जा तन–मन मैं रति रहे मोहन तहाँ ग्यान का आवै।
चाहो जितनी बात प्रबोधो ह्याँ को जो पति आवै।
अमृत खाइ अब देखि इनारून को मूरख जो भूले।
'हरिचंद' ब्रज ले कटली बन काटौ तो फिरि फूलै।

2. दुख से रूला–रूलाकर तुने मुझे चिताया,
मैं मस्त हो रहा था तब हाय। अंजुमन में।
बाजे बजा–बजाकर मैं था तुझे रिझाता,
तब तू लगा हुआ था पतितों के संगठन मे।
मैं था विरक्त तुझसे जग की अनित्यता पर,
उत्थान भर रहा था तब तू किसी पतन में।
तू बीच में खड़ा था बेबस गिरे हुओं के,
मैं स्वर्ग देखता था, झुकता कहां चरण में?

3. वह आता–
दो टूक कलेजे के करता पछताता
पथ पर आता ।
पेट–पीठ दोनों मिलकर हैं एक,
चल रहा लकुटिया टेक,
मुट्ठी–भर दाने को –भूख मिटाने को
मुँह फटी पुरानी झोली का फैलाता–
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।

4. मेरा पग पग संगीत भरा,
श्वासों से स्वप्न–पराग झरा,
नभ के नव रंग बुनते दुकूल,
छाया में मलय–बयार पली!

मैं क्षितिज–भृकुटि पर घिर धूमिल,
चिंता का भार बनी अविरल,
रज–कण पर जल–कण हो बरसी
नवजीवन–अंकुर बन निकली!

खंड –ख

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए : **10×4=40**

1. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।
2. द्विवेदी युगीन काव्य के अभिव्यंजना शिल्प पर विचार कीजिए।
3. जयशंकर प्रसाद के काव्य की अंतर्वस्तु का विवेचन कीजिए।
4. सुमित्रानंदन पंत की काव्य चेतना के विकास को रेखांकित कीजिए।

खंड –ग

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए : **5×4=20**

5. मैथिलीशरण गुप्त की कविता में निहित नारी सम्मान की भावना पर विचार कीजिए।
6. रामनरेश त्रिपाठी की सांस्कृतिक चेतना को रेखांकित कीजिए।
7. महादेवी वर्मा की सौन्दर्यानुभूति पर प्रकाश डालिए।
8. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला के शिल्पगत वैशिष्ट्य का परिचय दीजिए।